पर्यटन उद्योग में रोजगार की संभावनाएं

श्रीमती इन्दू आसेरी
सहायक आचार्य अर्थशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय आबूरोड़ (सिरोही) राज.

सारांश

पर्यटन उद्योग भारत के तीव्र गति से विकसित होते उद्योगों में से एक है तथा राष्ट्र के लिये विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक प्रमुख माध्यम भी है। इसका राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में 6.23 प्रतित और भारत के रोजगार में 8.78 प्रतिात योगदान है। भारत में प्रतिवर्ष लगभग 6.6 मिलियन विदेशी पर्यटकों का आगमन और 851 मिलियन घरेलू पर्यटकों द्वारा भ्रमण किया जाता है। विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद् के अनुसार, भारत सर्वाधिक 10 वर्षीय विकास क्षमता के साथ (2009-2018) पर्यटन का केन्द्र बन जायेगा । यात्रा एवं प्रतिस्पर्धा पर्यटन रिपोर्ट, 2007 ने भारत में पर्यटन का प्रतियोगी कीमतों के संदर्भ में छठा तथा सुरक्षा एवं निरापदता के दृष्टि से 39वां स्थान दिया है। इससे स्पष्ट होता है कि पर्यटन उद्योग का भारत की राष्ट्रीय आय में भी एक महत्वपूर्ण योगदान है। इस प्रकार पर्यटन उद्योग न केवल राष्ट्रीय आय में वृद्धि का माध्यम है वरन् इसके द्वारा बड़ी मात्रा में रोजगार सृजन किया जाना भी संभव है। भारत के ऐतिहासिक महत्व तथा यहाँ के विभिन्न शहरों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखते हुए यहाँ पर पर्यटन उद्योग के विकास की असीम संभावनायें दिखायी देती हैं तथा इस क्षेत्र में रोजगार सृजन के भी पर्याप्त अवसर प्रतीत होते हैं। इसके लिये केवल कुशल नियोजन तथा दृढ़ इच्छा-शक्ति की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: प्रतिस्पर्धा, पर्यटन, रोजगार सृजन

प्रस्तावना

किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग का विशेष महत्व होता है। देश के लाखों लोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इस उद्योग के माध्यम से रोजगार प्राप्त करते हैं। देश को अर्जित विदेशी पूंजी का एक बड़ा भाग पर्यटन द्वारा ही प्राप्त होता है। जो भी राष्ट्र अपने आप में पर्यटन योग्य क्षमता रखता है उसके आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग की एक सशक्त भूमिका होती है। राष्ट्रीय आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग के महत्व का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि किसी भी पर्यटन स्थल पर इस उद्योग में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसके लगभग 80% व्यक्ति जुड़े रहते हैं। इसमें उद्योग एवं श्रम के नये-नये आयाम बनते जाते हैं जिससे अधिक से अधिक लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। इसी कारण इसे श्रम नियोजित उद्योग भी कहा जाता है। भारतीय पर्यटन उद्योग की अवधारणा को यदि विस्तृत रूप में विश्लेषित किया जाये तो पता चलता है कि यह देश का ऐसा उद्योग है जिस पर देश के लाखों परिवारों की आजीविका निर्भर है। एक मात्र यहो उद्योग ऐसा है जो कि अन्य राष्ट्रों के लोगों को हमारी सभ्यता, संस्कृति, प्राकृतिक सौन्दर्य, अखण्डता तथा अनेकता में एकता के दर्शन कराता है। भारतीय पर्यटन उद्योग राष्ट्रीय आय के स्रोतों का एक प्रमुख साधन है तथा विदेशी मुद्रा को अर्जित करने में सहायक है। यदि वास्तव में देखा जाये तो यहाँ की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की लोचपूर्ण व्यवस्था को नियन्त्रित करने में पर्यटन उद्योग का विशेष महत्व होता है।

यदि भारतीय पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति का आकलन किया जाये तो ज्ञात होता है कि सन् 1980 के पश्चात् यहाँ पर्यटन के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ है। इसके मुख्य कारणों में यहाँ स्थित समुद्री सुहावना तटीय भाग, सांस्कृतिक विरासत, हस्त शिल्प सामग्री, धार्मिक स्थल, योग, आयुर्वेद, सदाबहार वन, प्राकृतिक स्वास्थ्यप्रद वातावरण तथा शीतल ग्लेशियर इत्यादि तो हैं ही; साथ ही भारतीय सरकार द्वारा इस उद्योग को बढ़ावा देने के लिये उठाये जाने वाले कदमों ने भी पर्यटन उद्योग को प्रमुख उद्योगों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है।

सन् 1951 में भारत में आने वाले विदेशी पर्यटको की संख्या 17 हजार थी जो सन् 2000 में 2.65 मीलियन, सन् 2005 में 3.92 मीलियन, सन् 2010 में 5.78 मीलियन और सन् 2012 में 6.65 मीलियन तक बढ़ गयी। इसके कारण विदेशी मुद्रा के अर्जन में भी वृद्धि हुई। जहाँ यह सन् 2000 में 15,626 करोड़ रुपये थी वहीं सन् 2005 में 33,123 करोड़ रुपये, सन् 2010 में 64,889 करोड़ रुपये और सन् 2012 में 94,487 करोड़ रुपये हो गई।

यहाँ की सांस्कतिक सम्पदा को संरक्षित रखने हेतु South Asia Travel and Tourism Exchange (STATE) तथा Indian National Tourist for Art & Culture (INTAC) पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु विशेष योजना बनायी थी जो इस समय भी चल रही है। इसके अतिरिक्त भारत में पर्यटन के विकास हेतु पर्यटन मंत्रालय नोडल एजेंसी है जो अतुल्य भारत अभियान की देखरेख करती है।

भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन एवं विदेशी मुद्रा की प्राप्ति

(वर्ष 2000 से 2012 तक)

वर्ष	**विदेशी पर्यटकों की** संख्या	**पूर्व** वर्ष की तुलना में प्रतिशत परिवर्तन	विदेशी मुद्रा की **प्राप्ति (करोडों** रुपयों में)	**पूर्व** वर्ष की तुलना में प्रतिशत परिवर्तन
2000	**2649378**	**6.7**	**15626**	**20.6**
2001	**2537282**	**-4.2**	**15083**	**-3.5**
2002	**2384364**	**-6.0**	**15064**	**-0.1**
2003	**2726214**	**14.3**	**20729**	**37.6**
2004	**3457477**	**26.8**	**27944**	**34.8**
2005	**3918610**	**13.3**	**33123**	**18.5**
2006	**4447167**	**13.5**	**39025**	**17.8**
2007	**5051504**	**14.3**	**44360**	**13.7**
2008	**5282603**	**4.0**	**51294**	**15.6**
2009	**5167699**	**-2.2**	**53700**	**4.7**
2010	**5775692**	**11.8**	**64889**	**20.8**
2011	**6309222**	**9.2**	**77591**	**19.6**
2012	**6648318**	**5.4**	**94487**	**21.8**

स्रोतः- पर्यटन मंत्रालय, वार्षिक रिपोर्ट 2012-13

उपरोक्त आंकड़ों के अतिरिक्त यदि व्यावहारिक रूप में देखा जाये तो भारतीय पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति का आकलन इन्हीं उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि हिमालय क्षेत्र, जहाँ कभी सन्नाटा पसरा रहता था वर्तमान में वहाँ पर्यटकों के दृष्टिगत बडे-बडे भवनों के निर्माण, सुविधाओं की व्यवस्था, सुरक्षा के प्रबन्ध आदि होने के कारण अब यह जीवन्त हो उठा है। इसी प्रकार कश्मीर की घाटी भी जहाँ सर्दियों में बर्फ गिरने के कारण कभी वहाँ के निवासी अपना आवास छोड़कर नीचे आ जाते थे, आज वहाँ देशी एवं विदेशी पर्यटक स्कीइंग के लिये जाते हैं जिस कारण वहाँ के स्थानीय निवासियों के साथ-साथ पर्यटन उद्योग से जुड़े अन्य व्यक्तियों को भी रोजगार मिलता है तथा आर्थिक लाभ की प्राप्ति भी होती है। जल-क्रीड़ा को पसन्द करने वाले पर्यटकों का ध्यान रखते हुये आज सरकार ने कई स्थानों, जैसे- लखनऊ, चिलका झील, नागार्जुनी सागर, विजयवाड़ा, पाण्डीचेरी, लक्षद्वीप इत्यादि में जल क्रीड़ा केन्द्र खोल दिये हैं जो पर्यटन उद्योग की आय का मुख्य स्रोत बन गये हैं। वर्तमान समय में पर्वतारोहण करना, हाथी पर बैठकर खुले जंगल की सैर करना अथवा विभिन्न क्षेत्रों की लोक कलाओं और लोक संस्कृति की जानकारी लेना आदि पर्यटन उद्योग के विकास के कारण ही सम्पन हो सका है।

उपरोक्त के अतिरिक्त छोटे-2 पर्यटन केन्द्रों पर केन्द्र अथवा राज्य सरकारों ने टूरिस्ट कार्यालय खोल रखे है। प्रत्येक राज्य के केन्द्रों में बड़े शहरों तथा विकसित स्थलों पर भी ये कार्यालय स्थापित किये गये हैं। इन कार्यालयों में यात्रा सम्बन्धी पुस्तकें, विवरण विश्रामगृह इत्यादि उपलब्ध होने के साथ 2 यहाँ के कर्मचारी भी पर्यटकों को सहयोग प्रदान करते हैं।

पर्यटन उद्योग एक वृहद उद्योग है। इसे संचालित करने में प्रत्यक्ष रूप से भले ही कुछ ही व्यक्ति दिखायी देते हो परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से न केवल पर्यटन स्थल के समीप के लोग अर्पित अन्य क्षेत्रों के लोगों का भी इसमें अतुलनीय योगदान होता है जो कि इसी उद्योग में लग कर अपनी आजीविका प्राप्त कर रहे हैं।

पर्यटन उद्योग एक सेवा क्रिया भी है। इसमें बहुत बड़ी संख्या में विभिन्न प्रकार के श्रम का लाभ शासन द्वारा नियुक्त कर्मचारियों को प्राप्त होता है तथा इसी उद्योग में दूसरे प्रकार लोग भी समाहित होते हैं जो स्वेच्छा से अपनी आय के लिए स्वतंत्र रूप से कार्य करते हुए इसमें अपना योगदान करते हैं। इससे स्पष्ट है कि दो प्रकार के श्रम इसमें लगे होते हैं एक जो किसी नियोक्ता अथवा उन बड़े उद्यमियों के अधीन कार्यरत् हैं जो कि पर्यटन उद्योग में लगे है तथा दूसरा वह अम जो कि एकांगी अपनी जीविका के उपार्जनार्थ पर्यटन उद्योग में जुटा होता है और इसकी प्रक्रिया का एक अंग बन जाता है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि पर्यटन कार्यालय होटल, पर्यटन एजेन्सी, गाईड, परिवहन के विभिन्न साधन, दुकानदार, बीमा कम्पनियां, सुरक्षा कम्पनियां इत्यादि संस्थानों में कार्यरत् लाखों लोग पर्यटन उद्योग के माध्यम से रोगजार प्राप्त कर रहे है।

भारतीय पर्यटन उद्योग में रोजगार प्राप्त व्यक्तियों का विश्लेषण

भारतीय पर्यटन उद्योग में व्यक्तियों को सर्वाधिक रोजगार विकय कार्य एवं भोजनालय व्यवसाय में प्राप्त है। इन दोनों व्यवसायों में इस क्षेत्र से जुड़े कुल व्यक्तियों में से 61.33% व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। इसके विपरीत पर्यटन एजेन्सी, यात्रा एजेण्टस, सुरक्षा कार्य तथा अन्य कार्यों में मात्र 10.00% व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। शेष 38.17% व्यक्ति पर्यटन गाइड होटल उद्योग, परिवहन उद्योग, हस्ती "ल्म उद्योग तथा प्रचार एवं प्रसार उद्योग में रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पर्यटन उद्योग से अर्जित पन कई उद्योगों से अर्जित उद्योगों के समूहों का संगठन होने के कारण एक हाथ में न पहुंचकर कई हाथों में पहुंचता है। इससे एक हाथ में आप का संचयन नहीं हो पाता। राष्ट्र के विभिन्न घटकों में पहुंचने के कारण यह धन राष्ट्र के विकास में सहायक बनता है। पर्यटक एक स्थान का कमाया पैसा दूसरे स्थान पर खर्च करता है तथा जितने लोगों को यह मिलता है उनकी आय बढ़ती है तथा उनका जीवन स्तर भी ऊपर उनता है। इस प्रकार पर्यटन उद्योग राष्ट्रीय आय के सामाजिक वितरण का एक अत्यन्त प्रभावपूर्ण माध्यम है।

पर्यटन उद्योग से जुडे मानव संसाधन की समस्याएं

भारतीय पर्यटन उद्योग से जुडे मानव संसाधन को निम्न स्तरीय कार्यद"ओं जैसे कार्य के घण्टे अशुद्ध हवा एवं पानी कम प्रका" एवं अस्वच्छ वातावरण में कार्य करना पडता है। इसके अतिरिक्त पारिश्रमिक सहित अवका", मातृत्व अवका", कार्य के बीच विश्राम अवका", क्षा सुविधा, चिकित्सा सुविधा, पदोन्नति, बीमा सुरक्षा, दुर्घटना सुरक्षा, प्राक्षण सुविधा, दुर्घटना क्षतिपूर्ति, रोजगार में स्थायित्व आदि सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है। केवल यही नहीं नियोक्ता द्वारा शोषण, भविष्य में विकास के अवसरों का अभाव, सरकारी प्रयासों में निष्क्रियता आदि दुर्भाग्यताओं का भी द" झेलना पडता है। यें कार्यद"यें इस उद्योग में कार्यरत् गैर-सरकारी असंगठित क्षेत्र के मानव संसाधनों के लिये विपरीत प्रभाव उत्पन्न करती हैं। केन्द्रीय एवं प्रदेश सरकारों की पर्यटन नीति तथा उपलब्धियां पर्यटन एक ऐसा विषय था जो कि 5 दशक पूर्व तक अनियोजित कार्यक्रमों की सूची में शामिल था। भारत में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पर्यटन के लिये योजनाएं तैयार करने की नींव रखी जिनमें प्रथम पंचवर्षीय योजना से लेकर वर्तमान की 12वीं पंचवर्षीय योजना तक अनवरत् सुधार होता चला आ रहा है। अब जबकि पर्यटन एक उद्योग के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका है तो इसको विकसित करने के लिये अनेकों महत्वपूर्ण योजनाएं तथा नीतियां सिर्फ पर्यटन को ध्यान में रखकर ही बनायी जाने लगी हैं। अधिकां" पर्यटन नीतियां केन्द्र पर्यटन मंत्रालय द्वारा ही तैयार की जाती है तथा वे समय, परिस्थिति एवं साधनों को ध्यान में रखकर विभिन्न राज्यों में लागू कर दी जाती हैं। विभिन्न राज्यों में चलने वाली भिन्न-भिन्न पर्यटन नीतियों के मुख्य

लक्ष्य लगभग एक समान होते हैं जो कि केन्द्र पर्यटन मंत्रालय द्वारा पूर्व में ही निर्धारित कर दिये जाते हैं । केन्द्र पर्यटन मंत्रालय द्वारा तैयार की गयी पर्यटन नीतियों को राज्यों के पर्यटन मुख्यालयों द्वारा अपने राज्य के परिवे", वातावरण तथा साधनों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुये लागू करना होता है।

केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों के समवेत प्रयासों से जो पर्यटन उद्योग कुछ समय पूर्व तक उपेक्षित था वर्तमान में नित नयी उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है। एक ओर तो यह उद्योग दें" की रोजगार क्षमता में वृद्धि करता है तथा दूसरी ओर देगा की धार्मिक, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक धरोहरों को सुरक्षित रखने का कार्य भी करता है ।

भारतीय पर्यटन उद्योग वैसे तो विकास की गति पकड़ चुका है किन्तु चूँकि यह एक सेवा उद्योग भी है इसलिये केन्द्र एवं राज्य सरकारों को मिल कर इसके समुचित विकास की ओर ध्यान देना चाहिये, तभी विश्व पर्यटन परिदृश्य में भारत का व्यक्तित्व उभर कर सामने आ सकेगा ।

भारत में पर्यटन उद्योग के विकास एवं इसमें रोजगार वृद्धि के लिये सुझाव

भारत में पर्यटन उद्योग के विकास एवं इसमें रोजगार वृद्धि के लिये निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं- पर्यटकों के रास्ते में आने वाली विभिन्न कठिनाइयों, जैसे असुरक्षा की भावना, अज्ञानता का अनुचित लाभ उठाने की प्रवृत्ति, गाइडों का असन्तोषजनक व्यवहार, दलाली, कमी" न आदि को दूर करना आवशयक है।

जो भी विदेशी पर्यटक भारत आये वह ऐसी धारणा मन में लेकर लौटें कि भारत में पर्यटन सस्ता, आरामदायक एवं आकर्षक है। इसके लिए हममें से प्रत्येक व्यक्ति को यह ख्याल रखना होगा कि पर्यटक हमारे राष्ट्रीय अतिथि हैं, अतः उनकी भावनाओं और सुख सुविधाओं का हर संभव ध्यान रखा जाना चाहिए। प्रदेश में पर्यटन व उद्योग के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए दीर्घकालीन पर्यटन नीति, विशिष्ट व व्यापक बजट प्रावधान तथा प्रभावोत्पादक व्यूह-रचना का निर्माण अति आवश्यक है। आवश्यकता इस बात की है कि यहां परिवहन के विभिन्न साधनों का विकास करके पर्यटन उद्योग का विस्तार किया जाए।

होटलों की कमी को देखते हुए हमें घरों में उपलब्ध अतिरिक्त कमरों के प्रयोग की योजना 'पेइंग गेस्ट' को और अधिक आकर्षक बनाना चाहिये। अनेक राष्ट्रों में यह योजना अत्यधिक लोकप्रिय साबित हो रही है ।

पैलेस ऑन व्हील्स के समान निजी उद्यमियों एवं रेल मंत्रालय के सहयोग से अनेक रेलें चलाई जा सकती हैं। इससे यहां एक ओर पर्यटन स्थल का विकास होगा वहीं दूसरी ओर ठहरने की समस्या का भी समाधान हो सकेगा।

किसी पर्यटन स्थल के आर्थिक विकास के लिए यह आव यक हो जाता है कि वहां के स्थानीय लोगों को भी पर्यटन से जोड़ा जाए। अतः पर्यटन विकास के लिए स्थानीय संसाधनों का अधिकतम प्रयोग किया जाना चाहिये।

टूर आपरेटरों व गाइडों के द्वारा पर्यटकों को ठगने की प्रवृत्ति को समाप्त करने के लिए कारगर प्रयासों की आव" यकता है। इस सन्दर्भ में प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पर्यटन मंत्रालय द्वारा ऐसी दुकानों का संचालन किया जाना चाहिए जहां से पर्यटक उचित मूल्यों पर खरीदारी कर सकें ।

होटलों में आव यक सुविधाओं का अभाव, पर्यटन स्थलों पर व्याप्त गंदगी व दूषित वातावरण, योग्य एवं अनुभवी गाइडों का अभाव, ट्रैवल एजेन्टों अथवा गाइडों द्वारा पर्यटकों को ठगने की प्रवृत्ति, विदेशी मुद्रा परिवर्तन में कठिनाई आदि अनेक ऐसी समस्यायें हैं जिन पर अविलम्ब चिंतन कर इनके समाधान की आव" यकता है ।

पर्यटन स्थलों का आकर्षण उनका सौन्दर्य होता है जिसके वशीभूत होकर पर्यटक आकर्षित होते हैं। किसी भी पर्यटन स्थल के प्रति यदि पर्यटकों का आकर्षण बनाये रखना है तो समय-समय पर उसका सौन्दर्यीकरण करते रहना आव यक है ।

न केवल सरकार अपितु गैर-सरकारी पर्यटन संगठनों को भी पर्यटन उद्योग को विकसित करने के लिये सच्चे हृदय से प्रयास करने की आव" यकता है। इसके अतिरिक्त स्थानीय प्रशासन को चाहिए कि वह उन सभी सुविधाओं की उपलब्धता को सुनिचित करे जो इस उद्योग के विकास के लिये आव यक हैं सरकार एवं नियोक्ता को चाहिये कि वह अपने प्रयत्नों से इस उद्योग से जुडे मानव संसाधन के कार्य के घण्टों में कमी करने का प्रयास करे ताकि वह अपने जीवन को मानवीय तरीके से जी सकें ।

पर्यटन उद्योग में मानव संसाधन के लिये जिस प्रकार

शुद्ध हवा, पानी, प्रका" एवं स्वच्छता की कमी पायी जाती है वह मानवीय कार्यद"ओं के ऊपर एक कठोर प्रहार है। सरकार एवं नियोक्ता वर्ग को चाहिये कि इस उद्योग में लगे व्यक्तियों के लिये ऐसा स्वच्छ एवं सुन्दर वातावरण बनायें ताकि कार्य करते समय उनका मन प्रसन्न रहे तथा उनकी कार्यक्षमता में भी वृद्धि हो ।

पर्यटन उद्योग में सरकारी क्षेत्रों में कार्यरत् महिला मानव संसाधनो को जिस प्रकार सवैतनिक मातृत्व अवका" की सुविधा पाप्त होती है उसी प्रकार गैर-सरकारी संगठित एवं असंगठित क्षेत्रों में भी महिला मानव संसाधनों को इस प्रकार की सुविधा प्राप्त होने का प्रावधान होना चाहिये क्योंकि इस सुविधा को प्राप्त करना उनका मूलभूत अधिकार है।

जिस प्रकार सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में मध्यावका" का प्रावधान है उसी प्रकार गैर-सरकारी संगठित एवं असंगठित उद्योगों में भी कर्मचारियों के लिये कार्य के मध्य विश्राम का प्रावधान होना चाहिये ताकि इस क्षेत्र के उद्योगों में लगे मानव संसाधन का स्वास्थय ठीक रहे तथा वे और अधिक स्फूर्ति से अपने काम को कर सकें ।

आव" यकता इस बात की है कि सरकार गैर-सरकारी संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के उद्योगों की कार्य प्रणाली में हस्तक्षेप करके वहाँ नियुक्त मानव संसाधनों को चिकित्सा सुविधा मिलने का प्रबन्ध करवाने की पहल करे । सरकार द्वारा गैर-सरकारी संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के नियोक्ताओं से मिलकर वहाँ नियुक्त मानव संसाधनों को बीमा सुविधा मिलने का प्रबन्ध करवाने की पहल करनी चाहिये । दुर्घटना से बचाव के सन्दर्भ में सरकार द्वारा जो नियम बनाये जाते हैं उनका सभी उद्योगों से कडाई से पालन कराया जाना चाहिये तथा जो भी व्यक्ति इस कार्य में बाधक बन उसके लिये कठोर दण्ड का प्रावधान किया जाना चाहिये ।

यदि पर्यटन उद्योग को विकास की ओर अग्रसर करना है तो इसमें कार्यरत् मानव संसाधन के लिये प्रक्षण की उचित व्यवस्था करनी होगी। इसके लिये सरकार एवं गैर-सरकारी उपक्रमों के नियोक्ताओं के समवेत् प्रयासों की आव" यकता है कि वे समय-समय पर प्रक्षण "विरों का आयोजन करते रहें ।

सरकार द्वारा इस प्रकार के नियम एवं योजनायें बनायी जानी चाहिये जिससे कि गैर-सरकारी संगठित एवं असंगठित उद्योगों में कार्यरत् व्यक्ति भी दुर्घटना क्षतिपूर्ति का लाभ उठा सकें ।

रोजगार में स्थायित्व के लिये गैर-सरकारी क्षेत्र के संगठित एवं असंगठित क्षेत्रों के व्यक्तियों को स्वयं के प्रयासों से ही अपने आप को इतना योग्य बनाना होगा कि वें जिस उपक्रम में कार्यरत् हैं वहाँ के नियोक्ता की आव यकता बन जायें ।

नियोक्ता द्वारा कर्मचारियों के शोषण के विरुद्ध सरकार द्वारा कडे नियम बनाये जाने चाहिये तथा जो भी व्यक्ति इन नियमों के पालन में बाधक बने उसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही का प्रावधान किया जाना चाहिये ।

सरकार द्वारा विभिन्न उद्योगों के नियोक्ताओं के साथ मिलकर ऐसी सह योजनायें तैयार की जानी चाहियें जो कि पर्यटन उद्योग और इसमें कार्यरत् मानव संसाधनों के भविष्य में विकास के लिये नये अवसरों को प्रदान करने में सहायक हो सकें ।

पर्यटन उद्योग एवं इसमें कार्यरत् मानव संसाधन के विकास के लिये सरकार द्वारा जो भी प्रयास किये जाते हैं उन्हें लागू करते समय इस बात का ध्यान रखने को आव" यकता है कि ये प्रयास सरकारी क्षेत्रों के साथ-साथ गैर-सरकारी संगठित एवं असंगठित क्षेत्रों में भी समान रूप से लाभ पहुँचाये ।

संदर्भ पुस्तकें

1. महन्त, जनार्दन, इण्डियन टूरिज्म इन्डस्ट्री उटलुक; ग्लोबल विजन पब्लिक "न बम्बई 2005.

2. खण्ड़ारी एवं चन्द्रा; टूरिज्म एण्ड सस्टेनेबल डवलपमेंट; श्री पब्लि"ार्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2004.

3. खण्ड़ारी एवं शर्मा; टूरिज्म डवलपमेंट - प्रिन्सिपिल्स एण्ड प्रेक्टिस; श्री पब्लि"ार्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2004.

4. यादव एवं शर्मा; टूरिज्म एण्ड हॉस्पीटिलिटी इन टवन्टी फर्स्ट सेंचुरी; श्री पब्लि" र्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स; नई दिल्ली; 2007.

5. बत्रा, जी० एस० एवं डंगवाल, आर० सी०; टूरिज्म प्रमोन एण्ड डवलपमेंट; दीप एण्ड दीप पब्लिके" न्स प्रा० लि0; नई दिल्ली; 2001.

6. सरनगधरण, जी0 राजू, टूरिज्म एण्ड सस्टेनेबिल इकॉनोमिक डवलपमेंट; न्यू सेंचुरी पब्लिके" न्स, नई दिल्ली; 2005.

7. गुप्ता, दीपक राज एवं गुप्ता, अनिल, ट्रैवल एण्ड टूरिज्म मैनेजमैन्ट; अभिषेक पब्लिके" ान्स; चण्डीगढ; 2008.

8. पठानिया, कुलवन्त सिंह एण्ड अरुण कुमार; टूरिज्म इन इण्डिया; रीगल पब्लिके" न्स; नई दिल्ली, 2008.

9. खानन, एस०; होटल इण्डस्ट्री इन इण्या; दीप एण्ड दीप पब्लिके" न्स प्रा० लि0; नई दिल्ली; 2005. रिपोर्ट्स एण्ड पब्लिकन्स

10. होटल एण्ड कैटरिंग मैनेजमैन्ट ए पब्लिकेशन ऑफ इण्टरने "नल होटल एसोसिन.

11. इण्डियन होटलकीपर एण्ड कैटरर ए मन्थली जनर्ल ऑफ ओबराय ग्रुप ऑफ होटल्स.

12. इण्डियन होटलियर एण्ड कैटरर ए मन्थली जर्नल ऑफ द फैडर"न ऑफ होटल एण्ड रेस्टोरेन्ट एसोसिन ऑफ इण्डिया.